ट्रंप के साथ दूसरी शिखर वार्ता विफल रहने से बौखलाए किम जोंग ने अपने विशेष दूत को गोलियों से भूनवाया- रिपोर्ट

किम ह्योक चोल फरवरी में हनोई शिखर सम्मेलन के लिए अमेरिका के विशेष प्रतिनिधि स्टीफन बेजगुन के समकक्ष थे.

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

नई दिल्ली : उत्तर कोरिया ने नेता किम जोंग उन और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच हुए दूसरे शिखर सम्मेलन के 'विफल' रहने के बाद उत्तर कोरिया इससे इतना तिलमिला गया था कि उसने अमेरिका में अपने विशेष दूत को मौत को घाट उतार दिया था. दक्षिण कोरिया के एक अखबार ने शुक्रवार को यह दावा किया.

दक्षिण कोरियाई समाचार पत्र चोसुन इल्बो के मुताबिक, किम ह्योक चोल, जिन्होंने हनोई वार्ता की आधारशिला रखी और किम जोंग के साथ उनकी निजी ट्रेन में सफर किया था, को फायरिंग दस्ते द्वारा गोलियों से भून दिया गया. उत्तर कोरिया का मानना है कि इस बैठक की विफलता को लेकर उन्होंने "सर्वोच्च नेता के साथ विश्वासघात" किया.

अखबार ने एक अज्ञात सूत्र के हवाले से बताया, फ्किम ह्योक चोल को मार्च में मिरिम हवाई अड्डे पर चार वरिष्ठ विदेश मंत्रालय के अधिकारियों के साथ एक जांच के बाद मौत के घाट उतार दिया गया." अन्य अधिकारियों के नाम नहीं बताए गए हैं. किम ह्योक चोल फरवरी में हनोई शिखर सम्मेलन के लिए अमेरिका के विशेष प्रतिनिधि स्टीफन बेजगुन के समकक्ष थे.

हालांकि दक्षिण कोरिया के एकीकरण मंत्रालय, जो अंतर-कोरियाई संबंधों को देखता है, ने इस रिपोर्ट पर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया है.

उल ?लेखनीय है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उत्तर कोरिया के सर्वोच्च नेता किम जोंग उन के बीच शिखर सम्मेलन बिना किसी समझौते के समाप्त हुआ था. वॉशिंगटन द्वारा आर्थिक प्रतिबंधों में राहत देने की प्योंगयांग की मांग को खारिज किए जाने के बाद शिखर सम्मेलन समाप्त हुआ था.

किम के साथ दो दिवसीय शिखर सम्मेलन तय समय से पहले खत्म कर देने के बाद वियतनाम की राजधानी में संवाददाताओं को संबोधित करते हुए ट्रंप ने कहा था कि वह उत्तर कोरिया नेता के साथ परमाणु निरस्त्रीकरण समझौते पर हस्ताक्षर करने से पीछे हट गए, क्योंकि वे प्योंगयांग पर से आर्थिक प्रतिबंधों को हटाने के लिए समझौते पर नहीं पहुंच सके थे.

वियतनाम के हनोई में दोनों नेताओं के बीचहुआ दूसरा शिखर सम्मेलन सिंगापुर में इनके बीच की बैठक के आठ महीने बाद हुआ था.

परवेज मुशर्रफ की हालत बिगड़ी, अस्पताल में भर्ती, अदालत में चल रहा है राजद्रोह का मुकदमा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

दुबई: पाकिस्तान के पूर्व सैन्य शासक जनरल (सेवानिवृत्त) परवेज मुशर्रफ की हालत बृहस्पतिवार को अचानक बिगड़ गयी और उन्हें यहां एक अस्पताल में भर्ती कराया गया. दुबई से नेशन अखबार के मुताबिक, मुशर्रफ (75) किसी से भी मुलाकात या बात नहीं कर रहे हैं. मुशर्रफ 2007 में संविधान को निलंबित करने के लिए राजद्रोह के आरोपों का सामना कर रहे हैं. वह मार्च 2016 से दुबई में रह रहे हैं. पूर्व सैन्य प्रमुख उपचार के लिए दुबई गए थे और सुरक्षा तथा स्वास्थ्य कारणों से तब से वह नहीं लौटे. पूर्व की खबरों में कहा गया था कि पूर्व राष्ट्रपति की बीमारी ने उनके तंत्रिका तंत्र को कमजोर कर दिया है. मुशर्रफ को खड़े होने और चलने में दिक्कतें आ रही हैं.

मुशर्रफ राजद्रोह मामले की सुनवाई 12 जून तक टली एक विशेष अदालत ने गुरुवार को पाकिस्तान के पूर्व सेना प्रमुख परवेज मुशर्रफ के अनुरोध को स्वीकार करते हुए उनके खिलाफ राजद्रोह मामले की सुनवाई 12 जून तक के लिए स्थगित कर दी थी. मुशर्रफ ने विशेष अदालत से अपने खराब स्वास्थ्य का हवाला देकर राजद्रोह मामले की सुनवाई को गुरुवार (आज) से बढ़ाकर रमजान के बाद करने का आग्रह किया था.

जियो न्यूज के मुताबिक, पूर्व सैन्य तानाशाह के वकील सलमान सफदर ने अदालत को बताया कि उनके मुवक्किल की हालत बेहद खराब है। इस वजह से वह सुनवाई में हिस्सा नहीं ले सकते। इसके बाद न्यायमूर्ति ताहिरा सफदर की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय पीठ ने मामले की सुनवाई 12 जून तक के लिए स्थगित कर दी.

वकील ने मुशर्रफ की ओर से एक आवेदन में कहा कि मजबूत इच्छाशक्ति और पाकिस्तान लौटने की उत्सुकता के बावजूद, बीमारियों और चिकित्सा जटिलताओं के कारण वह विशेष अदालत में पेश नहीं हो सकते. वकील ने कहा, वह शर्मिदा हैं और समय पर नहीं पहुंचने के कारण माफी मांग रहा है. वह चलने में असमर्थ है, वकील ने कहा कि उन्होंने मुशर्रफ के साथ तीन दिन बिताए थे और यह देखकर हैरान थे कि वह मुश्किल से बोल पा रहे हैं.

वकील ने कहा, डॉक्टरों ने कहा है कि इस स्थिति में यात्रा करना उनके लिए सुरक्षित नहीं है।

भारत के बाद अब ये देश भी रूस से खरीद रहा है एस-400, अमेरिका बौखलाया

व्हीलबारगर ने गुरुवार को यहां अटलांटिक काउंसिल में अपने संबोधन में कहा, ''यह खरीद-फरोख्त न सिर्फ एफ-35 कार्यक्रम के लिए विध्वंसकारी होगी बल्कि यह नाटो के साथ तुर्की की अंतर-व्यवस्था को भी नुकसान पहुंचाएगी.''

वॉशिंगटन : एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

पेंटागन के एक शीर्ष अधिकारी ने कहा है कि यदि तुर्की 'रूसी मिसाइल रक्षा प्रणाली' खरीदता है तो उसके परिणाम संयुक्त 'एफ-35' लड़ाकू कार्यक्रम के लिए विध्वंसकारी होंगे तथा नाटो के साथ उसके संबंधों पर भी असर पड़ेगा.

अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा मामलों के लिए कार्यवाहक सहायक रक्षा मंत्री के व्हीलबारगर का कहना है कि रूसी मिसाइल रक्षा प्रणाली 'एस-400' खरीदने की तुर्की की योजना पश्चिमी सहयोगियों के साथ काम करने की उसकी क्षमता को समाप्त करेगी साथ ही देश पर प्रतिबंध लगाने के लिए अमेरिका को मजबूर करेगी. व्हीलबारगर ने गुरुवार को यहां अटलांटिक काउंसिल में अपने संबोधन में कहा, ''यह खरीद-फरोख्त न सिर्फ एफ-35 कार्यक्रम के लिए विध्वंसकारी होगी बल्कि यह नाटो के साथ तुर्की की अंतर-व्यवस्था को भी नुकसान पहुंचाएगी.''

उन्होंने कहा, ''यह स्पष्ट है कि 'एस-400' रूसी प्रणाली हैं जो एफ-35 जैसे विमानों को गिराने के लिए तैयार की गई है. और यह कल्पना से परे है कि रूस उस समग्र अवसरों का लाभ नहीं उठाएगा.''

व्हीलबारगर ने कहा कि अमेरिका का मानना है कि तुर्की यह सौदा इस लिए कर रहा है ताकि सीरिया से लगी उसकी सीमा पर कुर्द विद्रोहियों के खिलाफ उसे रूस का सहयोग मिल सके.

उन्होंने कहा कि ट्रंप प्रशासन अगर इस खरीद-फरोख्त के लिए तुर्की को दंड़ न भी देना चाहे लेकिन अंकारा के लिए सख्त रुख वाली कांग्रेस उसे ऐसा करने के लिए बाध्य करेगी.

शपथ ग्रहण के तुरंत बाद PM मोदी ने शुरू किया काम, किर्गिस्तान के राष्ट्रपति से की द्विपक्षीय वार्ता

नई दिल्ली: **एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)**

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को दोबारा प्रधानमंत्री पद की शपथ ली. जिसके तुरंत बाद ही उन्होंने काम भी शुरू कर दिया. शपथ ग्रहण समारोह के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किर्गिस्तान के राष्ट्रपति सूरोनबे जीनबेकोव के साथ द्विपक्षीय मुद्दों पर व्यापक वार्ता की.

बता दें किर्गिस्तान के राष्ट्रपति जीनबेकाव भारत नई सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए आए थे. जिसके बाद उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भेंट की और दोनों देशों के महत्वपूर्ण मुद्दों पर बातचीत की.

किर्गिस्तान के राष्ट्रपति जीनबेकाब से हुई वार्ता के बारे में प्रधानमंत्री कार्यालय ने ट्वीट करके बताया कि शपथ ग्रहण समारोह के बाद प्रधानमंत्री ने किर्गिस्तान के राष्ट्रपति सूरोनबे जीनबेकोव के साथ व्यापक बातचीत की. दोनों नेताओं ने दोनों देशों के नागरिकों के पारस्परिक हित के लिए सहयोग में विविधता लाने पर विचार-विमर्श किया गया.

बता दें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में किर्गिस्तान के राष्ट्रपति जीनबेकाब के अलावा और भी अन्य कई देशों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था. जिनमें श्रीलंका के राष्ट्रपति मैत्रीपाल सिरिसेन, नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली, मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जगन्नाथ, म्यांमां के राष्ट्रपति यू विन माइंत और भूटान के प्रधानमंत्री लोटये शेरिंग भी शामिल हुए.